हैं और दितिपुत्रों की 'दैत्य' संज्ञा है। सभी आदित्य भगवद्भक्त हैं, जबकि दैत्य नास्तिक हैं। दैत्यकुल में उत्पन्न होने पर भी प्रह्लाद बाल्य-काल से परम भागवत थे। उनके भक्तिभाव और देवोपम स्वभाव को देखते हुए उन्हें श्रीकृष्ण का रूप कहा जाता है।

सब प्रकार के दमनकारी तत्त्वों में काल श्रीकृष्ण का रूप है, क्योंकि समय के साथ प्राकृत-जगत् की प्रत्येक वस्तु का ह्रास हो जाता है। नाना प्रकार के पशुओं में सिंह सर्वाधिक शक्तिशाली एवं खूंखार है तथा पक्षियों की लाखों योनियों में भगवान् विष्णु के वाहन श्रीगरुड़जी सब से उत्कृष्ट हैं।

पवनः पवतामस्मि रामः शस्त्रभृतामहम्।
झषाणां मकरश्चास्मि स्रोतसामस्मि जाह्नवी।।३१।।

पवनः=वायु; **पवताम्**=पवित्र करने वालों में; **अस्मि**=(मैं) हूँ, **रामः**=राम; **शस्त्रभृताम्**=शस्त्रधारियों में; **अहम्**=मैं (हूँ); **झषाणाम्**=जलचरों में; **मकरः**=मगरमच्छ; **च**=भी; **अस्मि**=(मैं) हूँ; **स्रोतसाम्**=नदियों में; **अस्मि**=(मैं) हूँ; **जाह्नवी**=गंगा।

अनुवाद

मैं पवित्र करने वालों में वायु हूँ और शस्त्रधारियों में राम हूँ; जलचरों में मैं मगरमच्छ हूँ और नदियों में गंगा हूँ।।३१।।

तात्पर्य

मगरमच्छ बड़े जलचरों में एक है और मनुष्य के लिए बहुत भयावह है। अतः यह श्रीकृष्ण की विभूति है। नदियों में माँ गंगा की सर्वोपरि महिमा है। रामायण के नायक भगवान् राम श्रीकृष्ण के एक विशेष अवतार हैं। ये योद्धाओं में सबसे बलशाली शूरवीर हैं।

सर्गाणामादिरन्तश्च मध्यं चैवाहमर्जुन।
अध्यात्मविद्या विद्यानां वादः प्रवदतामहम्।।३२।।

सर्गाणाम्=सम्पूर्ण सृष्टि का; **आदिः**=आदि; **अन्तः**=अन्त; **च**=तथा; **मध्यम्**=मध्य; **च**=भी; **एव**=निःसन्देह; **अहम्**=मैं (हूँ); **अर्जुन**=हे अर्जुन; **अध्यात्म-विद्या**=अध्यात्म-ज्ञान; **विद्यानाम्**=सम्पूर्ण विद्याओं में; **वादः**=तत्त्व-निर्णय; **प्रवदताम्**=तर्कों में; **अहम्**=मैं (हूँ)।

अनुवाद

हे अर्जुन! मैं ही सम्पूर्ण सृष्टि का आदि, मध्य और अन्त हूँ; सम्पूर्ण विद्याओं में अध्यात्मविद्या हूँ और विवाद करने वालों में मैं तत्त्व-निर्णायक वाद हूँ।।३२।।

तात्पर्य

सृष्टिक्रम में सब से पहले महाविष्णु पाँच महाभूतों को रचते हैं और अन्त में